Dr. Jaya
Deptt. of sociology
Date:- 06/07/20
B.A Part-I (Hons.)
Paper-2, Unit-5
Lecture Series-63

Topic — Ideal type of Maxweber

मैक्सवेबर के अनुसार आदर्श-प्रारूप की तीन प्रमुख विशेषताएं हैं:-

1) इस आदर्श-प्रारूप का निर्माण, कर्त्ता की क्रिया के इच्छित अर्थ के अनुसार किया जाता है। अर्थात आदर्श प्रारूप में वैज्ञानिक के दृष्टिकोण से जो अर्थ एक क्रिया का है, वह उतना महत्वपूर्ण नहीं जितना कि उस क्रिया का वह अर्थ जो कि उसे करने वाला लगाता है। जर्मन भाषा में इसे Verstehen कहा जाता है। इस विशेषता ने सामाजिक विज्ञानों तथा प्राकृतिक विज्ञानों में अंतर को और भी स्पष्ट कर दिया

है। मैक्सवेबर ने इस अवधारणा को विकसित और विस्तार से लिया है।

2) आदर्श प्रारूप सब कुछ का वर्णन या विश्लेषण नहीं है, यह तो एक सामाजिक घटना या क्रिया के अति महत्वपूर्ण पक्षों का निरूपण है और इसीलिए आदर्श प्रारूप में कुछ तत्वों को उनके विशुद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है और कुछ को जानबूझ कर छोड़ दिया जाता है। इससे आदर्श प्रारूप में कुछ अनिश्चितता या अस्पष्टता नहीं आ पाती और वह अधिकाधिक यथार्थ बन जाता है। यद्यपि अपने अध्ययनों में इस सिद्धांत पर मैक्सवेबर स्वयं ही दृढ़ नहीं रह सके, फिर भी उन्होंने इस बात पर अधिक बल दिया है कि आदर्श प्रारूप को केवल सामाजिक क्रिया के प्रतिमान के तर्कसंगत तत्वों की ही व्याख्या करनी चाहिए और जो कुछ तर्कसंगत नहीं है उन्हें छोड़ देना चाहिए या अतर्क आदि के रूप में विचार किया जाना चाहिए। यह आदर्श प्रारूप के उन विशिष्ट गुणों या विशेषता की ओर संकेत करता है जो कि समाजशास्त्र को विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित करने में अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकता है।

3) आदर्श प्रारूपों को केवल मात्र ठोस ऐतिहासिक समस्याओं के विश्लेषण के लिए साधन या उपकरण के रूप में प्रयोग करना चाहिए, आदर्श प्रारूप को ढूंढ

निकालना ही सामाजिक विज्ञान का अंतिम लक्ष्य नहीं है। मैकाइवर का यह विश्वास है कि सामाजिक क्षेत्र में किसी भी प्रकार के विचार सिद्धांत की प्रणाली संभव नहीं है। क्योंकि सामाजिक समस्याएं परिस्थिति के अनुसार भिन्न होती हैं और चूंकि उन समस्याओं का स्वरूप अनुसंधान कर्ता के विशिष्ट दृष्टिकोण से संबंधित होता है इसलिए उनके समाधान के लिए अवधारणाओं अर्थात आदर्श स्वरूप को अंतिम मान लेना उचित नहीं होगा।